GAP भाषा
A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH
(ISSN – 2582-8770)
Globally peer-reviewed and open access journal.

मध्य प्रदेस की जनजातिन मा कुपोषण

अखिलेश त्रिपाठी

सहायक प्राध्यापक
मानविकी एवं उदार कला विभाग
रविन्द्र नाथ टैगोर विश्वविद्यालय , भोपाल
infotoakhilesh@gmail.com
मो. न0 9713439575

शोध सारांश

आपन देस न सिर्फ गांव से अपितु जन जातिन से भी समपन्न राष्ट्र बा | सन 2011 के जनगणना के हिसाब से अपने देस मा 705 जनजातिन रहत हीं| जनसंख्या के हिसाब से देखा जाय तो भारत मा कुल 8.6 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति के लोग रहत हैं जेमहा से सबसे अधिक जनजाति जनसंख्या मध्य प्रदेस मा रहत ही| सन 2015-16 मा समपन्न राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-4 के अनुसार मध्य प्रदेस और देसवा मा भी कुपोषण मा कमोबेशी आयी ही, मुकिल हालतिया आजो दुखद ही | मध्य प्रदेश मा 42 प्रतिशत गेदाहरह बौनेपन से जूझत हैं और इहौ से ढेर गेदाहरह कम वजन के मिले | ई हालत मा मध्य प्रदेस की जनजातिन मा कुपोषण के हलतिया का जाने का प्रयास ई शोध पत्र मा कीन गवा है|

मुख्य शब्द : मध्य प्रदेस , अनुसूचित जनजातिन , कुपोषण , जनजातिन मा कुपोषण

प्रस्तावना

आपन देसवा किसानन के देसवा बा हियां के कुल आबादी 121 करोड़ बा जेमहा से 83.44 करोड़ जने गांवन मा रहत हैं | इतनै मनिवन का दर्किनारकै के कौनो देस आपन भरकुल्लै विकास नाई कै सकत | हम मनैवन के जिये के लिये जौन चाही ओमहा प्रमुख जरूरत बा भरपेट भोजन और बढ़िहा स्वास्थ्य सेवाएं| अब तक जेतना शोध ई क्षेत्र मे भवा है वोहसे इ तौ साफ हुइ गवा बा कि गांवन और सहरन के गंदीबस्तिन मा लोगन के खराब स्वास्थ्य के मूल कारण सही जानकारी का अभाव बा जौन कि अशिक्षा की वजह से पैदा होत ही परन्तु यहके साथ ही इहौ गलत नाई है कि गरीबी और साधनन के कमीक चलते सभे जने मलेरिया, उल्टी-दस्त (डायरिया) और कुपोषण आदि से ग्रसित हुइ जावत हैं|

आपन देस न सिर्फ गांव से अपितु जन जातिन से भी समपन्न राष्ट्र बा | सन 2011 के जनगणना के हिसाब से अपने देस मा 705 जनजातिन रहत हीं| जनसंख्या के हिसाब से देखा जाय तो भारत मा कुल 8.6 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति के लोग रहत हैं जेमहा से सबसे अधिक जनजाति जनसंख्या मध्य प्रदेस मा रहत ही| सन 2015-16 मा समपन्न राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-4 के अनुसार मध्य प्रदेस और देसवा मा भी कुपोषण मा कमोबेशी आयी ही, मुकिल हालतिया आजो दुखद ही | मध्य प्रदेश मा 42 प्रतिशत गेदाहरह बौनेपन से जूझत हैं और इहौ से ढेर गेदाहरह कम वजन के मिले |

GAP भाषा
A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH
(ISSN – 2582-8770)
Globally peer-reviewed and open access journal.

जनजातिन के स्वास्थ पर पर्यायवरण के बिगडे के बहुत असर पड़त है | पर्यायवरण से जुडे एक संस्था के रपट ई उजागिर करत ही कि अपने देसवा के 70 प्रतिशत नदियां परदूसित हुइ गई हीं(Chawla et al. 2015)| जनजाती के जने स्वास्थ्य के परति लापरवाही और अज्ञानता के वजहा से पानी से जुड़े उपायन पर धियान नाई देते| ई वजहा यहर वहर बहुतै गंदगी होत ही और अनेक रोगवा भी फैलत हैं| यही सब रोगवा न सिरिफ बयस्कन का साथ ही गेदाहरन पर अधिक परभाव डालत है |

अनुसूचित जनजाति

जनजातिन का पारीभासित करत डॉ डी. एम. मजूमदार लिखत हैं कि 'एक वन्य जाति परिवारों अथवा परिवारों के समूह को संकलन होता है, जिसका एक सामान्य नाम है। जिसके सदस्य एक निश्चित भू-भाग में रहते है। सामान्य भाषा बोलते है और विवाह व्यवसाय अथवा उद्योग के विषय में निश्चित निषेधात्मक नियमों का पालन और एक निश्चित एवं मूल्यवान परस्पर आदान प्रदान की व्यवस्था का विकास करते है।'

वही डॉ रिवर्स लिखत है कि ' जनजाति एक ऐसा सरल सा समूह है जिसके सदस्य एक बोली बोलते हो और युद्ध आदि के समय सम्मिलित रूप से कार्य करते है।' और जैकब और स्टर्न के अनुसार 'एक ऐसा ग्रामीण समुदाय या ग्रामीण समुदायों का एक ऐसा समूह जिसकी समान भूमि हो, समान भाषा हो समान संस्कृति हो और जिस समुदाय के व्यक्तियों का आर्थिक दृष्टि से एक दूसरे के साथ ओत-प्रोत हो, जनजाति कहलाता है। '

कुलमिलाय के ई स्पष्ट है कि एक जनजाति, मलिवन के उ समूव बा जौन एक निश्चित भू क्षेत्र, भासा, सामाजिक नियम और उद्योग आदि विसयों मा एक सूत्र मा बंधा होत है|

ऊपर दी गयी परिभासा से जनजातिन की निम्न लिखित विसेसता हुई सकत हीं-

1. जनजाति अनेक परिवारन का समूह होत है |
2. हर जनजातिन की एक सामान्य भासा होत ही| ई भासा विचारन के आदान परदान और आपसी एकता मा सहायक होत हीं |
3. सभे के एक सामान्य नाम होत है |
4. ई सभी जने एक नियत भू भाग पररहत हैं जेकरी वजहा स जनजातिन मा सामुदायिक भावना भी मजबूत होत हीं |

कुपोषण

गरीबी गंदगी और असिक्षा की वजहा से आजादी के बादौ ग्रामीण और आदीवासी क्षेत्रो के जने स्वास्थ के खातिर सचेत नाई हैं| अपने देसवा मे ढेर के गेदाहरन का कुपोषण बा वोमहा से सब्से अधिक गेदाहरह आदिवासिन इलाके से आवत हैं| इन लड़िकन के चेहरवा मुरझान रहत है , सरीरवा टेढ़ बाकुर हुइ जात है | ई सब लच्छन गेदहरन मा बचपनै मा दिख जात है | जौन लड़िका कुपोसित होत है ऊ अपने उमिर के दूसरै लड़िके से एक्दम्मै अलग दिखत है यहकै मतलब कुपोसित गेदाहरह पहिचानब कौनो कठिक काम नाई बा| भारत जैसन बाकी विकासशील और

अविकसित देसन मा जहां जनजातिनरहत हीं उहां आहार मे अनाज कंद मूल ज्यादा खाई के वजहासे आहार मा प्रोटीन, विटामिन की कमी हुइ जात हीं और कार्बोहाइड्रेट बढ़ जात है |

भोजन से पौदा होये वाले रोगन के परमुख कारण बा अपौष्टिक आहार, जेकरी वजहा से कुपोसण के हालत हुई जात ही| जेलिफी (1966) कुपोसण का परिभासित करत कहत हैं कि 'यह एक विकृति की अवस्था है जो आवश्यक भोज्य पदार्थों की तुलनात्मक कमी, पूर्ण कमी या अधिकता के कारण उत्पन्न होती है। इस स्थिति का पता जैव-रसायन एवं शारीरिक परीक्षणों के द्वारा ही लगाया जा सकता है।' कुपोसण का वै आगे चार स्वरूप मा बांटत है –

अ. कम पोषण की अवस्था

ई अपर्याप्त खाना खाये की वजहा से एक समय अन्तराल मा पैदा होत ही |

ब. अधिक पोषण

ई एक विकृत अवस्था है जौन एक अन्तराल मा जरूरत से जादा खाना खायेक वजहा से पैदा होत ही|

स. असंतुलन की अवस्था

ई विकृति तब पैदा होत ही जब मनई आवस्यक भोजन का अस्न्तुलित रूप से खात है |

द. विशेष कमी की अवस्था

ई अवस्था तब पैदा होत ही जब कोई मनई एक विसेस प्रकार के आवस्यक खाद्य पदार्थ का बिल्कुल भी ग्रहण नाही करत |

कुपोषण के कारण

कुपोषण के कारण इ कुल होत हैं-

1. जनसंख्या विस्फोट
2. अज्ञान, अंधविस्वास व असिक्षा
3. पिछड़ा औद्योगिक स्तर
4. अस्वस्थ वातावरण
5. साधनहीनता
6. गरीबी

पोषण के सामाजिक पक्ष

भोजन सिरिफ प्रोटीन, खनिज, विटामिन और बाकी पोसण तत्वों से बना पदार्थ ही नही, ई मनई की सभ्यता के अंगौ बा|कौनो देस और ओकरी सभ्यता सिरिफ विचारन पर आधारित नही अपितु भोजन की दसा से भी वहकर बढ़ाई औ बुराई जानी जाय सकत है| भूख और कुपोसण के वजहा से मनई के समाज मा अनेक समस्याएं पैदा होत हीं| अमीर लोगन और गरीबवन मा कुपोसण का परभाव अलग अलग देखा जाय सकत है| गरीबवन के भोजन मा जरूरत के

चीजन की कमी की वजहा से कुपोसण की समस्या पैदा होत ही और सारीरिक व मानसिक विकास रुक जात है|
जेलिफी (1966) ने कुपोसण से जुड़े पारिस्थितिकीय कारणन के सूची बनाई रही जौन नीचे लिखी ही-

1. पर्यायवरणीय दशाओं का परभाव
2. सांस्कृतिक परभाव
3. सामाजिक आर्थिक कारक
4. खाद्य उत्पादन
5. चिकित्सकीय और शैक्षणिक सेवाएं

कुपोसण सिरिफ खायेक कमी की वजहा से नाय होत अपितु कबौ कदार सांस्कृतिक कारण के चलते कुछ लोग उपलब्ध बढ़िहा भोजन का छोड़ि के अलगरजी (जौन न खायेक चाही) के खाना खाय लेत है| इहौ सत्य है कि परम्परागत रीति रिवाज की वजहा से भी जनजाति के मनई कुछ विसेस खाना ही खावत हैं |

आदिवासी क्षेत्रों में रोगो एवं कुपोषण को दूर करने के उपाय

जनजातिन मा कुपोसण की स्थिती और कारण जाने के बाद ई जरूरी हुई जात है कि समस्या का दूर करेक लिये सही उपाय भी दिये जाय| ई विसय मा जनजातिन मा कुपोसण दूर के सम्भावित उपाय निम्नलिखित बाटैं –

1. गरीबी के निराकरण
2. जनजातीय क्षेत्रन मा शिक्षा व जनचेतना का प्रसार
3. जनजातीय क्षेत्रन मा रोजगार उपलब्ध कराना
4. सामुदायिक स्वास्थ्य की देखभाल
5. लडके लडकियन मा भेदभाव कम करें
6. उचित पोषण की व्यवस्था
7. शुद्ध जल की उपलब्धता
8. पोषक तत्वों की उपलब्धता
9. शिक्षा की समुचित व्यवस्था
10. परिवार नियोजन
11. शिशु व बाल मृत्यु दर को कम कर
12. गर्भवती औ धात्री मेहरारू के स्वास्थ्य के विसेस ध्यान रखकर

निष्कर्ष

अंत मा निष्कर्ष मा इहै कहा जाय सकत है कि जनजातीय समाज जौन हमरे देसवा के अभिन्न अंग बा वोहका विकास की मुख्य धारा मा लायेक अलावा देस के कुल विकास के कौनो उपाय नायी है | जब हमरे देस के सभी जने, चाहे वै सहरी हों के ग्रामेण या चाहे जनजतीय, सक्रिय रूप से देस के उन्नति आपन योगदान ना देहैं तब तकले देस के कुल

विकास की बात एक सपन ही लागत ही |

जनजातीय समाज के लोगन मा विसेस प्रकार के कार्यक्रमों औ योजनाओं से ही विसेस वान्छित परिवर्तन लाये जा सकत| निम्नांकित बिंदुवन का सम्मिलित करिके योजना निर्माण जनजातिन मा कुपोसण दूर करे मा कारगर हुइ सकत है-

1. अतिपिछडे जनजातीय क्षेत्रो मे शिक्षा का प्रसार |
2. जनजातिन मा पौष्टिक भोजन के महत्व का प्रचार |
3. जनजातिन मा स्त्रीशिक्षा की ब्यवस्था |
5. बच्चों के पोसण पर विसेस ध्यान |
6. जादू टोने जैसे अंधविस्वास का दूर कई के बीमारियन के इलाज हसपताल मे कराये का पर्चारित करे के चाही |

संदर्भ सूची

1. यादव एम.के.सिंह -आदिवासी समुदाय में स्वास्थ्य के कुछ पक्ष पृष्ठ क्रमांक 125-144
2. कुरूक्षेत्र ''आहार व पोषण, कुपोषण की रोकथाम'' नवम्बर-1994
3. कुरूक्षेत्र ''कितना प्रदुषित है हमारा पेयजल'' दिसम्बर-1991
4. कुरूक्षेत्र ''बढ़ती जनसंख्या और गिरता स्वास्थ्य'' सितम्बर-1996
5. कुरूक्षेत्र ''स्वास्थ्य चेतना का प्रसार आवश्यक'' अक्टूबर-नवम्बर 1996
6. कुरूक्षेत्र ''प्राथमिक शिक्षा स्थायी विकास की बुनियाद'' अक्टूबर-1996
7. यादव, एम.के.सिंह - ''आदिवासी समुदाय में स्वास्थ्य के कुछ पक्ष'' पृष्ठ क्रमांक 162-173
8. यादव, एम.के.सिंह,: ''आदिवासी समुदाय में स्वास्थ्य के कुछ पक्ष'' रावत पब्लिकेशन, जयपुर एवं नई दिल्ली 1994
9. शर्मा, एस.के.,: ''मध्यप्रदेश के आदिवासी'' 2006, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल
10. पाहवा, एस.आर.,: ''कोरकू जनजाति - एक समाजशास्त्रीय अध्ययन'' मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल 2005
11. तिवारी, एस.के. एवं शर्मा एस.के.,: ''मध्यप्रदेश की जनजातियाँ'' मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल 2005
12. पाठक, जया,: ''जीवन संघर्ष में बराबर की सहभागी आदिवासी स्त्रियां'' मध्य प्रदेश सन्देश, 25 मई 1985
13. श्रीमती कुलकर्णी ज्योति, :''सामान्य एवं उपचारात्मक पोषण'' शिवा प्रकाशन, इन्दौर 1991
14. हसनेन, एन.,: ''जनजातीय भारत'' जवाहर पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली 2003
15. उप्रेती, एस.सी.,:''भारती की जनजातियां'' राजस्थान ग्रन्थ अकादमी, जयपुर 2005